मार्गणाओं में बन्ध-व्युच्छित्ति

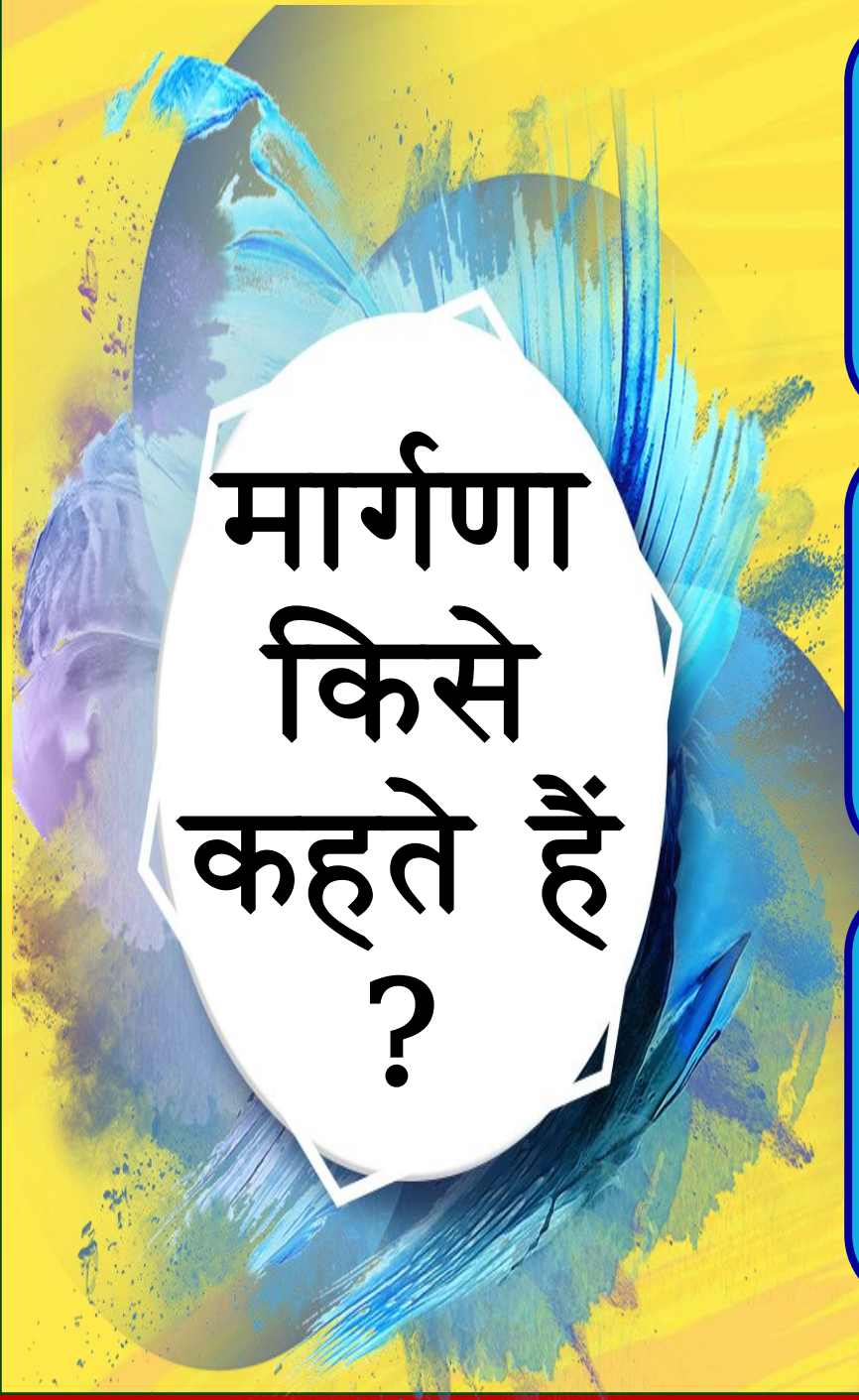

मार्गणा किसे कहते हैं ?

मार्गण शब्द का अर्थ है — अन्वेषण, खोजना

जिन परिणामों के द्वारा जीव का अन्वेषण किया जाए अथवा

जिन पर्यायों में जीव का अन्वेषण किया जाए, उन्हें मार्गणा कहते हैं ।

www.JainKosh.org

14 मार्गणायें

गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद
कषाय	ज्ञान	संयम	दर्शन	लेश्या
भव्य	सम्यक्त्व	संज्ञी	आहार	

www.JainKosh.org

गति	नरक, तिर्यंच, मनुष्य ,देव
इन्द्रिय	1, 2, 3, 4, 5 इन्द्रिय
काय	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, त्रस
योग	मन(4), वचन(4), काय(7)
वेद	पुरुष, स्त्री, नपुंसक
कषाय	क्रोध, मान, माया, लोभ
ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय, केवलज्ञान, कुमति, कुश्रुत, कुअवधिज्ञान

संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात, संयमासंयम, असंयम
दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवलदर्शन
लेश्या	कृष्ण, नील, कपोत, पीत, पद्म, शुक्ल
भव्य	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र
संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
आहार	आहार, अनाहार

मार्गणाओं में व्युच्छित्ति निकालने के नियम

1) कुल 120 बन्ध-योग्य प्रकृतियों में से विवक्षित मार्गणा में जो प्रकृतियाँ बंधती ही नहीं हैं, ऐसी अबन्धरूप प्रकृतियों को घटा लें ।

2) जिन प्रकृतियों को घटाया है, वे प्रकृतियाँ अब उस-उस गुणस्थान में घटायी नहीं जायेंगी क्योंकि पहले ही घटा चुके हैं ।

3) मार्गणाओं में विशिष्ट नियम के कारण जो प्रकृतियाँ बाद में व्युच्छिन्न होती थीं, वे पहले भी व्युच्छिन्न होती हैं । उनकी व्युच्छित्ति यथायोग्य करें ।

4) शेष सारी व्युच्छित्ति, बन्ध, अबन्ध गुणस्थान जैसा ही करना है ।

गतियों में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ निकालने के लिए सामान्य नियम

जो प्रकृतियाँ अगले भव में काम नहीं आ सकती हैं वे इस भव में बंधती भी नहीं हैं । उन्हें घटा दें ।

जैसे देव अगले भव में वैक्रियिक शरीर वाला नहीं हो सकता । अतः देवगति मार्गणा की बंध-योग्य प्रकृतियों में से वैक्रियिक शरीर प्रकृति घटा देंगे ।

ओघे वा आदेसे, णारयमिच्छम्मि चारि वोच्छिण्णा ।
उवरिम बारस सुरचउ, सुराउ आहारयमबंधा ॥105॥

- अन्वयार्थ – (आदेसे) मार्गणा में (ओघे वा) गुणस्थान के समान जानना । (णारयमिच्छम्मि) नरकगति में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में (चारि) चार की (वोच्छिण्णा) व्युच्छित्ति है ।
- (उवरिम बारस) सोलह प्रकृतियों में से ऊपर की बारह एकेन्द्रियादि प्रकृतियाँ (सुरचउ) देव-चतुष्क (सुराउ) देवायु (आहारयमबंधा) आहारक-द्विक – ये उन्नीस प्रकृतियाँ अबन्धरूप हैं ॥105॥

www.JainKosh.org

नारकी मरणकर
स्थावरों में, विकलत्रय में,
नरक और देव गति में
नहीं जन्मता है ।
अतः तत्संबंधी प्रकृतियाँ
घटाना चाहिए ।

नरक गति

अबन्ध प्रकृतियाँ	संख्या
स्थावर-3	3
सूक्ष्म-3	3
विकलेन्द्रिय-3	3
नरक-2	2
नरक-आयु	1
देव-चतुष्क	4
देवायु	1
आहारक-2	2
नरक गति में बन्ध योग्य	120–19 = 101

www.jainkosh.org

घम्मे तित्थं बंधदि, वंसामेघाण पुण्णगो चेव ।
छट्ठोत्ति य मणुवाउ, चरिमे मिच्छेव तिरियाऊ ॥106॥

- अन्वयार्थ – (घम्मे) घर्मा नामक प्रथम पृथ्वी में (तित्थं) तीर्थंकर प्रकृति का (बंधदि) बंध करता है ।
- (वंसामेघाण) वंशा और मेघा नामक दूसरी, तीसरी पृथ्वी में (पुण्णगो चेव) पर्याप्त जीव ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध करता है ।
- (छट्ठोत्ति य) छठी पृथ्वी तक ही (मणुवाउ) मनुष्यायु का बन्ध करता है ।
- (चरिमे) अंतिम सातवीं पृथ्वी में (मिच्छेव) मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में ही (तिरियाऊ) तिर्यंचायु का बन्ध होता है ॥106॥

www.JainKosh.org

नरक गति में बन्ध-व्युच्छित्ति

(120–19 = 101)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	4	100	तीर्थंकर
सासादन	25	96	4 व्युच्छिन्न, 1 तीर्थंकर
मिश्र	0	70	29 व्युच्छिन्न, तीर्थंकर, मनुष्यायु
अविरत	10	72	29 व्युच्छिन्न

ऐसे ही प्रथम 3 नरक में जानना

www.JainKosh.org

चतुर्थ से छठे नरक में बन्ध व्युच्छित्ति

चतुर्थ से सातवें नरक तक तीर्थंकर प्रकृति का भी बन्ध नहीं होता । अत: एक और प्रकृति बन्ध-योग्य में से घटायेंगे ।

चतुर्थ से छठे नरक में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 101 – तीर्थंकर = 100

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	4	100	0
सासादन	25	96	4
मिश्र	0	70	29, मनुष्यायु
अविरत	10	71	29

मिस्साविरदे उच्चं, मणुवदुगं सत्तमे हवे बंधो ।
मिच्छा सासणसम्मा, मणुवदुगुच्चं ण बंधंति ॥107॥

- अन्वयार्थ – (सत्तमे) सातवीं पृथ्वी में (मिस्साविरदे) मिश्र और असंयत गुणस्थान में ही (उच्चं मणुवदुगं) उच्चगोत्र और मनुष्यद्विक का बन्ध होता है।
- (मिच्छा सासणसम्मा) मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि (मणुवदुगुच्चं) मनुष्यद्विक और उच्चगोत्र का (ण बंधंति) बन्ध नहीं करते हैं ॥107॥

www.JainKosh.org

सप्तम नरक

यहाँ मनुष्यायु बन्ध-योग्य नहीं है क्योंकि सप्तम नरक से निकलकर तिर्यंच ही होता है ।

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 100 – मनुष्य आयु = 99

मिथ्यात्व व सासादन गुणस्थान में मनुष्य-2, उच्च गोत्र बन्ध-योग्य नहीं हैं ।

तिर्यंचायु का बन्ध मात्र मिथ्यात्व गुणस्थान में ही होता है । अतः इसकी बन्ध-व्युच्छित्ति मिथ्यात्व गुणस्थान में ही कर देंगे ।

सातवें नरक में बन्ध-व्युच्छित्ति

(120 – 21 = 99)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	4, तिर्यंचायु	96	मनुष्य-2, उच्च गोत्र
सासादन	24	91	5 व्युच्छिन्न + 3 पूर्वोक्त = 8
मिश्र	0	70	29 व्युच्छिन्न
अविरत	9	70	29 व्युच्छिन्न

www.JainKosh.org

तिरिये ओघो तित्थाहारूणो अविरदे छिदी चउरो । उवरिमछण्हं च छिदी, सासणसम्मे हवे णियमा ॥108॥

- अन्वयार्थ – (तिरिये) तिर्यंचगति में (ओघो) गुणस्थान के समान है, किंतु विशेषता यह है कि
- (तित्थाहारूणो) तीर्थंकर और आहारकद्विक का बन्ध नहीं होता ।
- (अविरदे) असंयत गुणस्थान में (छिदी) बंध-व्युच्छित्ति (चउरो) चार प्रकृति की है।
- (उवरिम छण्हं) ऊपर की शेष छह प्रकृतियों की (छिदी) व्युच्छित्ति (सासणसम्मे) सासादन सम्यक्त्व में (णियमा) नियम से (हवे) होती है ॥108॥

www.JainKosh.org

तिर्यंच गति

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	120
तीर्थंकर	– 1
आहारक-2	– 2
कुल बंध-योग्य	= 117

तिर्यंच गति में तीर्थंकर, आहारक-2 नहीं बन्धती हैं ।

सम्यग्दृष्टि तिर्यंच आयु बांधेगा, तो देव की ही बांधेगा ।

अतः मनुष्य गति संबंधित 6 प्रकृतियों की व्युच्छित्ति दूसरे गुणस्थान में ही हो जायेगी ।

www.JainKosh.org

सामान्य तिर्यंच में बन्ध व्युच्छित्ति
(120 – 3 = 117)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	16	117	0
सासादन	25 + 6 = 31 मनुष्य-2, औदारिक-2, वज्रऋषभनाराच, मनुष्यायु	101	16
मिश्र	0	69	47 + देवायु
असंयत	4	70	47
देशसंयत	4	66	51

ऐसे ही पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच और योनिमती तिर्यंच में जानना चाहिए

सामण्णतिरियपंचिंदियपुण्णगजोणिणीसु एमेव ।
सुरणिरयाउ अपुण्णे, वेगुव्वियछक्कमवि णत्थि ॥109॥

अन्वयार्थ – (सामण्णतिरियपंचिंदियपुण्णगजोणिणीसु) सामान्य तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पर्याप्त तिर्यंच, योनिमती तिर्यंच इनमें (एमेव) इसी प्रकार का होता है ।

(अपुण्णे) लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंच में (सुरणिरयाउ) देवायु, नरकायु (वेगुव्वियछक्कमवि) वैक्रियिक षट्क भी (णत्थि) नहीं है (अर्थात् इन 8 का बंध नहीं होता) । (वैक्रियिक षट्क अर्थात् देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिक अंगोपांग) ॥109॥

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय लब्धि-अपर्याप्त तिर्यंच

लब्धि-अपर्याप्तक तिर्यंच और मनुष्य मरणकर नारकी और देव नहीं होते । अतः नारकी और देव संबंधी 8 प्रकृतियाँ और घटाना चाहिए ।

इनका गुणस्थान एक मिथ्यात्व ही है । इसमें बन्ध-योग्य 109 प्रकृतियाँ हैं ।

तिर्यंच में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	117
वैक्रियिक-6	– 6
देवायु	– 1
नरकायु	– 1
कुल बंध-योग्य प्रकृतियाँ	= 109

तिरियेव णरे णवरि हु, तित्थाहारं च अत्थि एमेव । सामण्णपुण्णमणुसिणि-णरे अपुण्णे अपुण्णेव ॥110॥

- अन्वयार्थ – (तिरियेव) तिर्यंचगति के समान (णरे) मनुष्यगति में होता है। (णवरि हु) विशेष यह है कि मनुष्यगति में (तित्थाहारं) तीर्थंकर और आहारकद्विक का बन्ध (अत्थि) होता है ।
- (एमेव) इसी प्रकार (सामण्णपुण्णमणुसिणिणरे) सामान्य मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यिनी में जानना ।
- (अपुण्णे) अपर्याप्त मनुष्य में (अपुण्णेव) अपर्याप्त तिर्यंच के समान जानना ॥110॥

www.JainKosh.org

मनुष्य गति

इसमें ओघ के अनुसार ही है । (याने बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 120)

विशेषता सासादन गुणस्थान की बन्ध-व्युच्छित्ति में है क्योंकि सम्यग्दृष्टि मनुष्य मात्र देवगति और देव आयु ही बांधता है, अतः मनुष्य गति संबंधित 6 प्रकृतियाँ सासादन में व्युच्छिन्न होती हैं ।

www.JainKosh.org

मनुष्य गति
(बंध-योग्य प्रकृतियाँ 120)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	16	117	3
सासादन	25+6 = 31	101	16+3 = 19
मिश्र	0	69	47+3+देवायु
अविरत	4	71	47+2
देशसंयत	4	67	51+ 2

आगे ओघवत् जानना

इसी प्रकार पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यिनी में जानना ।

लब्धि-अपर्याप्त मनुष्य में लब्धि-अपर्याप्त तिर्यंच की तरह बन्ध-योग्य 109 प्रकृतियाँ होती हैं ।

www.JainKosh.org

णिरयेव होदि देवे, आईसाणोत्ति सत्त वाम छिदी ।
सोलस चेव अबन्धो, भवणतिए णत्थि तित्थयरं ॥111॥

- अन्वयार्थ – (णिरयेव) नरकगति के समान (देवे) देवगति में (होदि) है ।
- किन्तु (आईसाणोत्ति) ईशानस्वर्गपर्यन्त (वाम) मिथ्यात्व गुणस्थान में (सत्त) सात प्रकृतियों की (छिदी) व्युच्छित्ति है । (सोलस चेव) और सोलह प्रकृतियों के (अबन्धो) बन्ध का अभाव है ।
- (भवणतिए) भवनत्रिक देवों के (तित्थयरं) तीर्थंकर प्रकृति का (णत्थि) बन्ध नहीं होता है ॥111॥

www.JainKosh.org

देव गति

☛ देव मरणकर देव, नारकी, विकलेन्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण जीव नहीं बनते, अत: तत्संबंधी प्रकृतियाँ देवगति में बन्ध-योग्य नहीं हैं ।

☛ आहारक-द्विक का बन्ध भी संभव नहीं है ।

कुल बन्ध प्रकृतियाँ	120
वैक्रियिक-6	– 6
देवायु, नरकायु	– 2
सूक्ष्म-3	– 3
विकलत्रय	– 3
आहारक-2	– 2
कुल बंध-योग्य प्रकृतियाँ	= 104

देवगति में बन्ध व्युच्छित्ति
(120 – 16 = 104)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	7	103	1 तीर्थंकर
सासादन	25	96	7 + 1 = 8
मिश्र	0	70	32 + 1 + मनुष्यायु
असंयत	10	72	32

ऐसे ही सौधर्म-ऐशान में जानना चाहिए ।

www.JainKosh.org

कप्पित्थीसु ण तित्थं, सदरसहस्सारगोत्ति तिरियदुगं ।
तिरियाऊ उज्जोवो, अत्थि तदो णत्थि सदरचऊ ॥112॥

- अन्वयार्थ – (कप्पित्थीसु) कल्पवासिनी स्त्रियों में (तित्थं) तीर्थंकर का बन्ध (ण) नहीं होता ।
- (सदरसहस्सारगोत्ति) शतार-सहस्रार स्वर्ग तक ही (तिरियदुगं) तिर्यंचद्विक (तिरियाऊ) तिर्यंचायु और (उज्जोवो) उद्योत – इन चार प्रकृतियों का बन्ध (अत्थि) होता है । (तदो) उससे आगे (सदरचउ) शतार-चतुष्क का बन्ध (णत्थि) नहीं है ॥112॥

www.JainKosh.org

भवनत्रिक और देवियाँ
(104 – तीर्थंकर = 103)

भवनत्रिक, कल्पवासिनी देवियों में तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध नहीं है ।
अतः एक प्रकृति और कम करेंगे ।

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	7	103	0
सासादन	25	96	7
मिश्र	0	70	32 + मनुष्यायु
असंयत	10	71	32

सानत्कुमार से सहस्रार
(104 – 3 = 101)

सानत्कुमार से सहस्रार तक के देव एकेन्द्रिय नहीं बनते हैं, अतः तत्संबंधी प्रकृतियाँ (एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप) घटा देनी चाहिए ।

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	4	100	1 तीर्थंकर
सासादन	25	96	4 + 1 = 5
मिश्र	0	70	29 + 1 + मनुष्यायु
असंयत	10	72	29

आनत से नवग्रैवेयक
(101 – 4 = 97)

आनत से नवग्रैवेयक तक के देव मरणकर तिर्यंच गति में नहीं जाते, अतः तत्संबंधी प्रकृतियाँ (तिर्यंच-2, तिर्यंचायु, उद्योत) घटा देनी चाहिए ।

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	4	96	1 तीर्थंकर
सासादन	21	92	4 + 1 = 5
मिश्र	0	70	25 + 1 + मनुष्यायु
असंयत	10	72	25

◎नव अनुदिश, 5 अनुत्तर विमानों में सब देव सम्यग्दृष्टि ही हैं ।

◎चतुर्थ गुणस्थान में कही गई उपर्युक्त 72 प्रकृतियाँ ही वहाँ बंध-योग्य हैं ।

पुण्णिदरं विगिविगले, तत्थुप्पण्णो हु सासणो देहे ।
पज्जत्तिं णवि पावदि, इदि णरतिरियाउगं णत्थि ॥113॥

- अन्वयार्थ – (इगिविगले) एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय में (पुण्णिदरं व) पर्याप्तेतर अर्थात् लब्ध्यपर्याप्तक के समान है ।
- (तत्थुप्पण्णो हु) वहाँ उत्पन्न हुआ जीव (सासणो) सासादन गुणस्थान में (देहे पज्जत्तिं) शरीर पर्याप्ति को (ण वि पावदि) पूर्ण नहीं कर सकता । (इदि) इसलिये यहाँ (णरतिरियाउगं) मनुष्य और तिर्यंचायु का (णत्थि) बन्ध नहीं करता ॥113॥

www.JainKosh.org

एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय में बंध-योग्य प्रकृतियाँ

कुल प्रकृतियाँ	120
वैक्रियिक-6	– 6
देवायु, नरकायु	– 2
आहारक-2	– 2
तीर्थंकर	– 1
कुल बंध-योग्य प्रकृतियाँ	= 109

विशेष

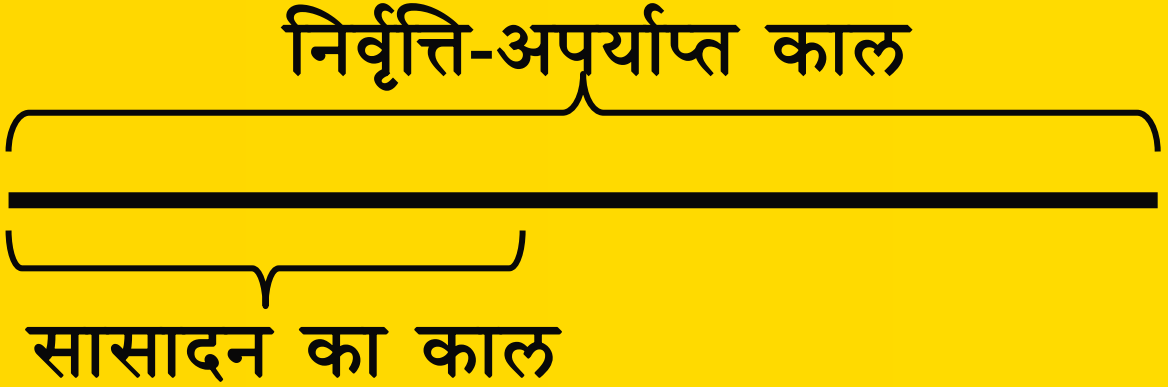

एकेन्द्रिय, विकलत्रय में द्वितीय गुणस्थान मात्र जन्मते समय संभव है ।

यह सासादन गुणस्थान पर्याप्ति पूर्ण होने के पहले तक ही रहता है ।

और इस अवस्था में आयु का बन्ध संभव नहीं,

अतः दो आयु की बन्ध-व्युच्छित्ति मिथ्यात्व गुणस्थान में ही हो जाती है ।

एकेन्द्रिय, विकलत्रय

(120 – 11 = 109)

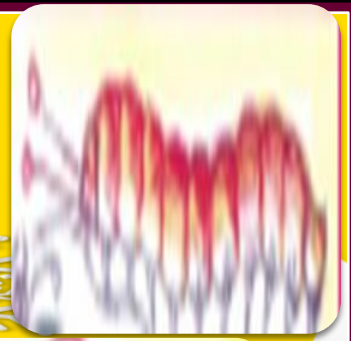

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	13 + मनुष्यायु, तिर्यंचायु = 15	109	0
सासादन	24 + 5 = 29	94	15

www.JainKosh.org

पंचिंदिएसु ओघं, एयक्खे वा वणप्फदीयंते ।
मणुवदुगं मणुवाऊ, उच्चं ण हि तेउवाउम्मि ॥114॥

- अन्वयार्थ – (पंचिदिएसु) पंचेन्द्रियों में (ओघं) गुणस्थान के समान जानना।
- (एयक्खे वा) एकेन्द्रिय के समान (वणप्फदीयंते) पृथ्वीकाय से वनस्पतिकायपर्यंत व्युच्छित्ति आदि जानना ।
- विशेष यह है कि (तेउवाउम्मि) तेजकायिक और वायुकायिक में (मणुवदुगं मणुवाऊ उच्चं) मनुष्यद्विक, मनुष्यायु और उच्चगोत्र – इन चार का (ण हि) बन्ध नहीं होता ॥114॥

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय

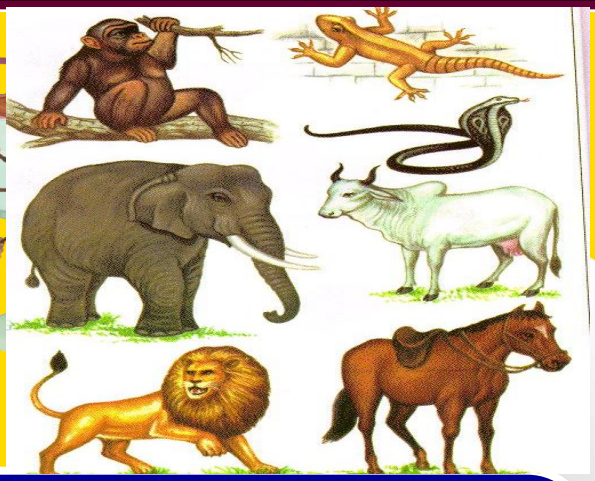

पंचेद्रियों में ओघ के समान व्युच्छित्ति, बंध आदि जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय लब्धि-अपर्याप्त को मनुष्य लब्धि-अपर्याप्त की भांति मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में बन्ध-योग्य 109 प्रकृतियाँ हैं ।

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय निर्वृत्ति-अपर्याप्त

निर्वृत्ति-अपर्याप्त अवस्था में आयु का बंध नहीं होता । अतः चारों आयु घटाना चाहिए ।

नरक-2 का बन्ध नहीं होता ।

आहारक-2 का बन्ध नहीं होता ।

अतः बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 120 – 4 – 2 – 2 = 112

तीर्थंकर, सुर-चतुष्क का बन्ध सम्यग्दृष्टि को ही होता है । अतः मिथ्यात्व और सासादन में 5 प्रकृतियाँ अबन्ध में रहेंगी ।

पंचेन्द्रिय निर्वृत्ति-अपर्याप्त
(120 – 8 = 112)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	13	107	5 (तीर्थ., सुर-4)
सासादन	24	94	13 + 5 = 18
अविरत	9 + 4 = 13	75	37
प्रमत्तसंयत	6 + 0 + 34 + 5 + 16 = 61	62	50
सयोग केवली	1	1	111

जिस मार्गणा में बीच के गुणस्थान नहीं पाए जाते हों, वहाँ आगे के छूटे हुए गुणस्थान की बन्ध-व्युच्छित्ति पूर्व के गुणस्थान में ही कहनी चाहिए ।

www.jainkosh.org

काय मार्गणा

पृथ्वीकायिक

जलकायिक

वनस्पतिकायिक

में एकेन्द्रिय के समान ही
बन्ध आदि जानना चाहिए ।

www.JainKosh.org

तेजकायिक, वायुकायिक

सासादन गुणस्थानवर्ती कोई जीव मरणकर तेज और वायु में उत्पन्न नहीं होता, अतः गुणस्थान एकमात्र मिथ्यात्व ही है ।

तेज और वायु जीव मरणकर मनुष्यों में उत्पन्न नहीं होते, मात्र तिर्यंचों में ही उत्पन्न होते हैं, अतः तत्संबंधी प्रकृतियाँ घटाना चाहिए ।

एकेन्द्रिय में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	109
मनुष्य-2	– 2
मनुष्यायु	– 1
उच्च गोत्र	– 1
कुल बंध-योग्य प्रकृतियाँ	=105

www.JainKosh.org

ण हि सासणो अपुण्णे, साहारणसुहुमगे य तेउदुगे ।
ओघं तस मणवयणे, ओराले मणुवगइभंगो ॥115॥

- अन्वयार्थ – (अपुण्णे) लब्ध्यपर्याप्तक में (साहारणसुहुमगे) साधारण वनस्पति, सर्वसूक्ष्म (य) और (तेउदुगे) तेजकायिक, वायुकायिक में (सासणो) सासादन गुणस्थान (ण हि) नहीं होता ।
- (तस मणवयणे) त्रसकाय, मनोयोग और वचनयोग मार्गणा में (ओघं) गुणस्थान के समान है ।
- (ओराले) औदारिक काययोग में (मणुवगइभंगो) मनुष्यगति के समान जानना ॥115॥

www.JainKosh.org

कहाँ-कहाँ सासादन गुणस्थान नहीं होता ?

1) साधारण जीवों में

2) लब्धि-अपर्याप्तकों में

3) सूक्ष्मकायिकों में

4) तेजकायिकों में

5) वायुकायिकों में

इन अवस्थाओं में मात्र मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है ।

www.JainKosh.org

त्रसकायिक

त्रसकायिक के बन्ध आदि गुणस्थानवत् जानना ।

त्रस निर्वृत्ति-अपर्याप्त के बन्ध आदि पंचेन्द्रिय निर्वृत्ति-अपर्याप्त समान जानना ।

त्रस लब्धि-अपर्याप्त के बन्ध आदि पंचेन्द्रिय लब्धि-अपर्याप्त समान जानना ।

www.JainKosh.org

मनोयोग, वचनयोग

मनोयोग, वचनयोग में गुणस्थान अनुसार ही बंधादि हैं ।

विशेष

1) मनोयोग, वचनयोग में गुणस्थान 13 होते हैं ।

2) असत्य, उभय मनोयोग और वचनयोग में गुणस्थान 12 होते हैं ।

3) सत्य, अनुभय मनोयोग और वचनयोग में गुणस्थान 13 होते हैं ।

औदारिक काययोग

औदारिक काययोग में बन्ध आदि मनुष्य गति अनुसार हैं ।

गुणस्थान 13 ही हैं ।

क्योंकि योग सयोगकेवली गुणस्थान तक ही पाये जाते हैं ।

ओराले वा मिस्से, ण सुरणिरयाउहारणिरयदुगं ।
मिच्छदुगे देवचओ, तित्थं ण हि अविरदे अत्थि ॥116॥

- अन्वयार्थ – (मिस्से) औदारिक मिश्र काययोग में (ओराले वा) औदारिक काययोग के समान जानना ।
- किन्तु विशेषता यह है कि (सुरणिरयाउहारणिरयदुगं) देवायु, नरकायु, आहारकद्विक और नरकद्विक (ण हि) बन्धयोग्य नहीं हैं । (मिच्छदुगे) मिथ्यादृष्टि और सासादन में (देवचऊ तित्थं) देवचतुष्क और तीर्थंकर – इन 5 प्रकृतियों का (ण) बन्ध नहीं होता । (अविरदे) असंयत गुणस्थान में (अत्थि) इनका बन्ध होता है ॥116॥

www.JainKosh.org

औदारिक मिश्र

औदारिक मिश्र

लब्धि-अपर्याप्त

निर्वृत्ति-अपर्याप्त

यहाँ मनुष्यायु, तिर्यंचायु बन्ध-योग्य हैं ।

यहाँ कोई भी आयु नहीं बंधती ।

मिश्र अवस्था में नरक गति-2, नरक आयु, आहारक-2, देवायु का बन्ध नहीं होता ।

~~मिथ्यात्व और सासादन में देव-चतुष्क का~~ बन्ध नहीं होता, मात्र सम्यग्दृष्टि को ही मिश्र अवस्था में देव-4 का बन्ध होता है

मिश्र अवस्था में आयु का बन्ध मात्र लब्धि-अपर्याप्तक ही करता है ।

www.JainKosh.org

औदारिक मिश्र में बंध-योग्य प्रकृतियाँ

कुल प्रकृतियाँ	120
नरक-2	– 2
नरकायु	– 1
देवायु	– 1
आहारक-2	– 2
कुल बंध-योग्य प्रकृतियाँ	= 114

पण्णारसमुणतीसं, मिच्छदुगे अविरदे छिदी चउरो ।
उवरिमपणसट्ठीवि य, एक्कं सादं सजोगिम्हि ॥117॥

- अन्वयार्थ – (मिच्छदुगे) मिथ्यात्व और सासादन में क्रम से (पण्णारसमुणतीसं) पंद्रह और उनतीस प्रकृतियों की (छिदी) बंध-व्युच्छित्ति होती है।
- (अविरदे) असंयत गुणस्थान में (चउरो) अप्रत्याख्यान कषाय चार (य) और (उवरिमपणसट्ठीवि) ऊपर के गुणस्थानों की 65 प्रकृतियाँ इस प्रकार कुल 69 प्रकृतियों की बंध-व्युच्छित्ति होती हैं ।
- (सजोगिम्मि) सयोगकेवली में (एक्कं सादं) एक साता वेदनीय की बंध-व्युच्छित्ति होती है ॥117॥

www.JainKosh.org

औदारिक मिश्र

(120 – 6 = 114)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	13 + मनुष्यायु, तिर्यंचायु	109	देव-4 + तीर्थंकर
सासादन	24 + मनुष्य-2, औदारिक-2, वज्रऋषभनाराच संहनन	94	15 + 5 = 20
असंयत	4 + 4 + 6 + 0 + 34 + 5 + 16 = 69	70	15 + 29 = 44
सयोगकेवली	1	1	113

www.JainKosh.org

देवे वा वेगुव्वे, मिस्से णरतिरियआउगं णत्थि ।
छट्ठगुणं वाहारे, तम्मिस्से णत्थि देवाऊ ॥118॥

- अन्वयार्थ – (वेगुव्वे) वैक्रियिक काययोग में बन्धप्रकृति (देवे वा) देवगति के समान है।
- (मिस्से) वैक्रियिक मिश्रकाययोग में (णरतिरियआउगं) मनुष्यायु, तिर्यंचायु का बन्ध (णत्थि) नहीं होता है ।
- (आहारे) आहारक काययोग में (छट्ठगुणं वा) छठे गुणस्थान के समान रचना है किन्तु (तम्मिस्से) आहारक मिश्रकाययोग में (देवाऊ) देवायु का (णत्थि) बन्ध नहीं होता है ॥118॥

www.JainKosh.org

वैक्रियिक काययोग में बन्ध आदि देवगति के समान हैं ।

वैक्रियिक मिश्र काययोग

देवगति के समान है, परन्तु

तिर्यंचायु, मनुष्यायु का बन्ध नहीं है ।

अत: बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ $104 - 2 = 102$

इसमें मिश्र गुणस्थान के बिना 3 गुणस्थान ही होते हैं ।

www.JainKosh.org

वैक्रियिक मिश्र

(104 – 2 = 102)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	7	101	तीर्थंकर
सासादन	24	94	7 + 1 = 8
असंयत	9	71	31

आहारक काययोग

आहारक काययोग में छठे गुणस्थानवत् बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 63 हैं ।

आहारक मिश्रकाययोग

आहारक मिश्रकाय योग में देवायु का बन्ध भी संभव नहीं है, अतः बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 62 हैं ।

गुणस्थान दोनों में प्रमत्तसंयत है ।

कम्मे उरालमिस्सं, वा णाउदुगंपि णव छिदी अयदे ।
वेदादाहारोत्ति य, सगुणट्ठाणाणमोघं तु ॥119॥

- अन्वयार्थ – (कम्मे) कार्मण काययोग में (उरालमिस्सं वा) औदारिक मिश्रकाययोग के समान है । किन्तु वहाँ (आउदुगंपि) दो आयुओं का भी (ण) बंध नहीं है ।
- (अयदे) असंयत में (णव) नौ प्रकृतियों की (छिदी) व्युच्छित्ति होती है ।
- (वेदादाहारोत्ति य) वेद मार्गणा से आहार मार्गणापर्यन्त (सगुणट्ठाणाणमोघं तु) अपने-अपने गुणस्थानों के समान सामान्य कथन है ॥119॥

www.JainKosh.org

कार्मण काययोग

यह औदारिक मिश्र के समान है

परन्तु यहाँ किसी आयु का बन्ध नहीं होता ।

यह चारों गति में पाया जाता है, अतः मनुष्यगति संबंधी प्रकृतियों की व्युच्छित्ति चतुर्थ गुणस्थान में ही होती है ।

कुल प्रकृतियाँ	120
4 आयु	– 4
नरक-2	– 2
आहारक-2	– 2
बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	= 112

कार्मण काययोग

(120 - 8 = 112)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	13	107	देव-4, तीर्थंकर
सासादन	24	94	13+5 = 18
असंयत	9+4+6+0+34 +5+16 = 74	75	13+24 = 37
सयोग केवली	1	1	37+74 = 111

www.JainKosh.org

वेदमार्गणा –

स्त्रीवेदी, नपुंसकवेदी

8वें गुणस्थान तक गुणस्थानवत् ही सारी रचना है ।

9वें गुणस्थान के प्रथम सवेद भाग में द्विचरम व चरम समय में विशेष है ।

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
अनिवृत्तिकरण, द्विचरम समय	1 पुरुषवेद	22	98
अनिवृत्तिकरण, चरम समय	0	21	99

स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी

स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी जीव के वेद का उदय व बन्ध एक साथ व्युच्छिन्न नहीं होते ।

उदय से एक समय पूर्व वेद की बन्ध-व्युच्छित्ति हो जाती है ।
अतः दो समय में दर्शाया है ।

पुरुषवेदी जीव

पुरुषवेदी जीव के बंध आदि गुणस्थानवत् जानना ।

परन्तु पुरुषवेद 9वें गुणस्थान के प्रथम भाग तक ही पाया जाता है ।

अतः यहीं तक व्युच्छित्ति कही जाती है ।

कषाय मार्गणा

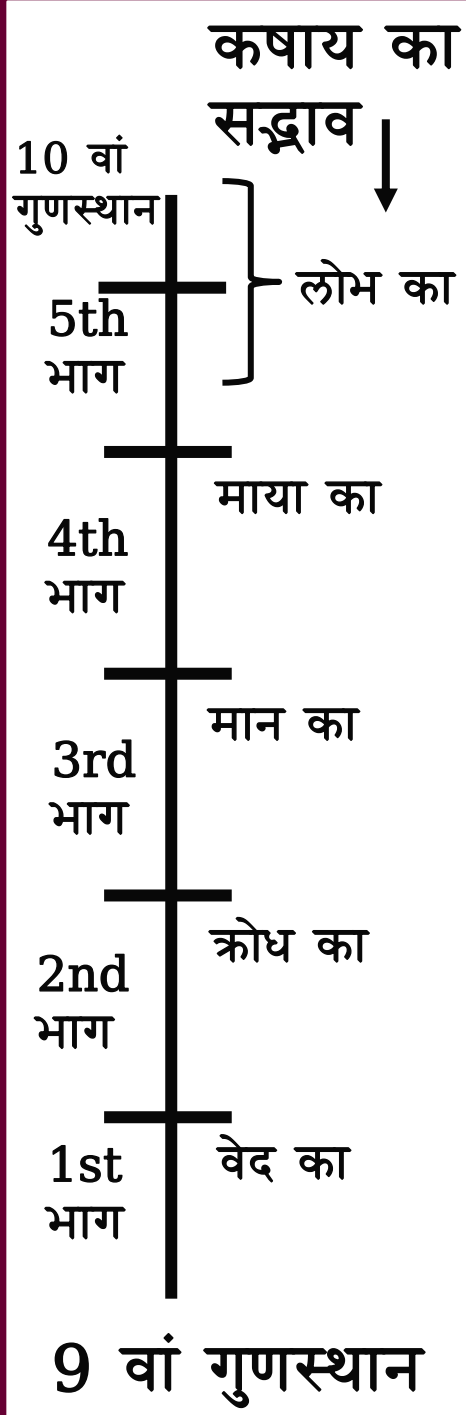

चारों ही कषायों में बंध आदि गुणस्थान अनुसार जानना ।

परन्तु क्रोध में 9वें गुणस्थान के द्वितीय भाग तक बंधादि कहना ।

मान में 9वें गुणस्थान के तृतीय भाग तक बंधादि कहना ।

माया में 9वें गुणस्थान के चतुर्थ भाग तक बंधादि कहना ।

लोभ में 10वें गुणस्थान के अन्त तक बंधादि कहना ।

ज्ञान मार्गणा – कुमति, कुश्रुत, विभंगज्ञान

कुमति, कुश्रुत, विभंगज्ञान में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 117

क्योंकि तीर्थंकर, आहारक-2 यहाँ बन्धने योग्य नहीं है।

गुणस्थान = 2

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	16	117	0
सासादन	25	101	16

www.JainKosh.org

मति, श्रुत, अवधिज्ञान

गुणस्थान — चार से बारह

इनकी व्युच्छित्ति का कथन गुणस्थानवत् है ।

मात्र अबन्ध में प्रकृतियों की संख्या बदलेगी ।

कुल प्रकृतियाँ	120
मिथ्यात्व में व्युच्छिन्न	–16
सासादन में व्युच्छिन्न	–25
बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	= 79

www.JainKosh.org

मति, श्रुत, अवधिज्ञान

(120 – 41 = 79)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
अविरत	10	77	आहारक-2
देशविरत	4	67	10 + 2 = 12
प्रमत्तसंयत	6	63	14 + 2 = 16
अप्रमत्तसंयत	1	59	20
अपूर्वकरण	36	58	21
अनिवृत्तिकरण	5	22	21 + 36 = 57
सूक्ष्म सांपराय	16	17	57 + 5 = 62
उपशांत मोह	0	1	62 + 16 = 78
क्षीणमोह	0	1	78

मन:पर्ययज्ञान में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ

प्रमत्तसंयत में बन्ध-योग्य	63
आहारक-2	+ 2
बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	= 65

इनका कथन गुणस्थान अनुसार जानना ।
मात्र अबन्ध प्रकृतियाँ बदलेंगी ।

www.JainKosh.org

मन:पर्ययज्ञान

(65)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
प्रमत्तसंयत	6	63	आहारक-2
अप्रमत्तसंयत	1	59	6
अपूर्वकरण	36	58	6+1 = 7
अनिवृत्तिकरण	5	22	7+36 = 43
सूक्ष्म सांपराय	16	17	43+5 = 48
उपशांतमोह	0	1	48+16 = 64
क्षीणमोह	0	1	64

केवलज्ञान

(1)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
सयोग	1	1	0
अयोग	0	0	1

www.JainKosh.org

संयम मार्गणा

असंयम में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 118 हैं, क्योंकि आहारक-2 असंयम में बन्ध-योग्य नहीं है ।

व्युच्छित्ति आदि कथन गुणस्थानवत् है, मात्र अबन्ध प्रकृतियों की संख्या बदलेगी ।

www.JainKosh.org

असंयम

(120 – 2 = 118)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	16	117	1 तीर्थंकर
सासादन	25	101	16+1 = 17
मिश्र	0	74	16+25 = 41, तीर्थंकर + 2 आयु
असंयत	10	77	41

देशसंयम

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 67

पंचम गुणस्थानवत्

सामायिक, छेदोपस्थापना संयम

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 65

गुणस्थान — प्रमत्तसंयत से अनिवृत्तिकरण

रचना मन:पर्यय के समान ।

परिहार-विशुद्धि संयम

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 65

गुणस्थान — प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत

रचना मन:पर्यय के समान ।

सूक्ष्म-सांपराय संयम

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 17

सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवत्

यथाख्यात संयम

बन्ध-योग्य प्रकृति — 1 साता वेदनीय

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
उपशांतमोह	0	1	0
क्षीण मोह	0	1	0
सयोग	1	1	0
अयोग	0	0	1

www.JainKosh.org

दर्शन मार्गणा

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन

व्युच्छित्ति आदि गुणस्थानवत् जानना

गुणस्थान एक से बारह तक लगाना ।

अवधिदर्शन

व्युच्छित्ति आदि अवधिज्ञानवत् लगाना ।

केवलदर्शन

व्युच्छित्ति आदि केवलज्ञानवत् लगाना ।

लेश्या मार्गणा

कृष्ण, नील, कपोत लेश्या

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 118, क्योंकि अशुभ लेश्या में आहारक-2 का बन्ध नहीं होता ।

गुणस्थान एक से चार ।

इनमें व्युच्छित्ति आदि असंयम की भांति जानना ।

णवरि य सव्वुवसम्मे, णरसुरआऊणि णत्थि णियमेण ।
मिच्छस्संतिमणवयं, बारं ण हि तेउपम्मेसु ॥120॥
सुक्के सदरचउक्कं, वामंतिमबारसं च ण च अत्थि ।
कम्मेव अणाहारे, बंधस्संतो अणंतो य ॥121॥

- अन्वयार्थ – (णवरि य) विशेषता यह है कि (सव्वुवसम्मे) प्रथमोपशम और द्वितीयोपशम में (णियमेण) नियम से (णरसुर आऊणि) मनुष्यायु और देवायु का (णत्थि) बन्ध नहीं है।
- (तेउपम्मेसु) पीत और पद्म लेश्या में (मिच्छस्संतिम) मिथ्यात्व की बंध-व्युच्छिन्न प्रकृतियों में से अंतिम (णवयं बारं) नौ और बारह प्रकृतियों का (ण हि) बन्ध नहीं होता ॥120॥
- अन्वयार्थ – (सुक्के) शुक्ल लेश्या में (सदरचउक्कं) शतार-चतुष्क अर्थात् तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचायु और उद्योत (च) और (वामंतिमबारसं) मिथ्यात्व गुणस्थान की अंतिम बारह प्रकृतियाँ – इन सोलह प्रकृतियों का बन्ध (ण अत्थि) नहीं होता है ।
- (कम्मेव) कार्मण काययोग के समान (अनाहारे) अनाहारक मार्गणा में (बंधस्संतो) बंध की व्युच्छित्ति (अणंतो) बंध (य) और अबंध जानना ॥121॥

www.JainKosh.org

पीत लेश्या में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ

सारा कथन गुणस्थानवत् । विशेष –

1) बन्ध प्रकृतियाँ 111 हैं ।

2) अबन्ध प्रकृतियों की संख्या बदलेगी ।

3) मिथ्यात्व गुणस्थान में व्युच्छित्ति 7 प्रकृतियों की होती है ।

कुल बन्ध प्रकृतियाँ	120
सूक्ष्म-3	– 3
विकलत्रय-3	– 3
नरक-2	– 2
नरकायु	– 1
बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	= 111

पीत लेश्या

(120 - 9 = 111)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	7	108	आहारक-2, तीर्थंकर
सासादन	25	101	7+3 = 10
मिश्र	0	74	7+25 = 32+3+2 आयु = 37
असंयत	10	77	32+ आहारक-2 = 34
देशविरत	4	67	32+10 = 42+2 = 44
प्रमत्तसंयत	6	63	42+4 = 46+2 = 48
अप्रमत्तसंयत	1	59	46+ 6 = 52

www.JainKosh.org

पद्म लेश्या

बन्ध आदि कथन गुणस्थानवत् ।

मिथ्यात्व गुणस्थान में व्युच्छित्ति 4 प्रकृतियों की होती है ।

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 108 हैं ।

अबन्ध प्रकृतियों की संख्या बदलेगी ।

गुणस्थान 1 से 7 तक होंगे ।

कुल प्रकृतियाँ	120
सूक्ष्म-3	– 3
विकलत्रय	– 3
एकेन्द्रिय-3	– 3
नरक-2	– 2
नरकायु	– 1
बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	= 108

पद्म लेश्या

(120 - 12 = 108)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	4	105	आहारक-2, तीर्थंकर
सासादन	25	101	4+3 = 7
मिश्र	0	74	4+25 = 29+3+मनुष्य, देव आयु = 34
असंयत	10	77	29+आहारक-2 = 31
देशसंयत	4	67	29+10 = 39+ 2 = 41
प्रमत्तसंयत	6	63	39+4 = 43+2 = 45
अप्रमत्तसंयत	1	59	43+6 = 49

शुक्ल लेश्या में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ

पद्म लेश्या में बध्यमान प्रकृतियाँ	108
शतार-4	– 4
शुक्ल लेश्या में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	= 104

शुक्ल लेश्या वाला जीव तिर्यंच गति संबंधित प्रकृतियों को नहीं बांधता ।

अतः तत्संबंधी 4 प्रकृतियाँ घटायी । (तिर्यंच-2, उद्योत, तिर्यंच आयु)

शुक्ल लेश्या

(120 – 16 = 104)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	4	101	आहारक-2, तीर्थंकर
सासादन	21	97	4+3 =7
मिश्र	0	74	4+21 = 25+3+2 आयु =30
असंयत	10	77	25+2 =27
देशसंयत	4	67	25+10 = 35+2 = 37
प्रमत्तसंयत	6	63	35+4 = 39+2 = 41
अप्रमत्तसंयत	1	59	39+6 = 45
अपूर्वकरण	36	58	45+1 = 46
अनिवृत्तिकरण	5	22	46+36 = 82
सूक्ष्मसांपराय	16	17	82+5 = 87
उपशांत-मोह	0	1	87+16 = 103
क्षीणमोह	0	1	103
सयोग केवली	1	1	103

www.jainkosh.org

भव्य मार्गणा

भव्य

सर्व कथन गुणस्थानवत् ।

अभव्य

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ 117 क्योंकि आहारक-2, तीर्थंकर का बन्ध संभव नहीं ।

गुणस्थान मिथ्यादृष्टि मात्र ।

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व मार्गणा

उपशम सम्यक्त्व में बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ

कुल बन्ध प्रकृतियाँ	120
मिथ्यात्व में व्युच्छिन्न	– 16
सासादन में व्युच्छिन्न	– 25
देवायु, मनुष्यायु	– 2
बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ	= 77

प्रथमोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा गुणस्थान –

4 से 7

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा गुणस्थान –

4 से 11

उपशम सम्यक्त्व

(120 – 43 = 77)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
अविरत	9	75	आहारक-2
देशसंयत	4	66	9+2 = 11
प्रमत्तसंयत	6	62	9+4 = 13+2 = 15
अप्रमत्तसंयत	0	58	13+6 = 19
अपूर्वकरण	36	58	19
अनिवृत्तिकरण	5	22	19+36 = 55
सूक्ष्मसांपराय	16	17	55+5 = 60
उपशांत-मोह	0	1	60+16 = 76

* प्रथमोपशम सम्यक्त्व की 4 से 7 गुणस्थान तक ऐसी ही रचना बनेगी ।

* द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में संपूर्ण ऐसी ही रचना बनेगी ।

क्षयोपशम सम्यक्त्व

- बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 79

(120 – 16 – 25 = 79)

- गुणस्थान 4 से 7
- सारी रचना गुणस्थानवत्

। मात्र अबन्ध प्रकृतियों

क्षायिक सम्यक्त्व

- बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 79
- गुणस्थान 4 से 14
- व्युच्छित्ति व बन्ध गुणस्थान समान, परन्तु अबन्ध प्रकृतियों की संख्या बदलेगी ।

www.JainKosh.org

क्षायिक सम्यक्त्व

(120 – 41 = 79)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
अविरत	10	77	आहारक-2
देशसंयत	4	67	10+2 = 12
प्रमत्तसंयत	6	63	10+4 = 14+2 = 16
अप्रमत्तसंयत	1	59	14+6 = 20
अपूर्वकरण	36	58	20+1 =21
अनिवृत्तिकरण	5	22	21+36 = 57
सूक्ष्मसांपराय	16	17	57+5 = 62
उपशांत-मोह	0	1	62+16 = 78
क्षीणमोह	0	1	78
सयोगकेवली	1	1	78
अयोगकेवली	0	0	79

मिथ्यादृष्टि को बन्ध-योग्य

117

सासादन को बन्ध-योग्य

101

मिश्र को बन्ध-योग्य

74

www.JainKosh.org

संज्ञी मार्गणा

संज्ञी जीव

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 120

गुणस्थान 1 से 12

सर्व कथन गुणस्थानवत् ।

असंज्ञी जीव

बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ = 117

गुणस्थान — 1, 2

www.JainKosh.org

असंज्ञी

(120 – 3 = 117)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	16+तिर्यंच, मनुष्य, देव आयु = 19	117	0
सासादन	24+मनुष्य-2, औदारिक-2, वज्रऋषभनाराच संहनन = 29	98	19

www.JainKosh.org

आहार मार्गणा

आहारक जीव

- गुणस्थान 1 से 13 ।
- सर्व कथन गुणस्थानवत् ।

अनाहारक जीव

- गुणस्थान — 1, 2, 4, 13, 14
- बन्ध-योग्य प्रकृतियाँ — कार्मण काययोग समान = 112
- रचना कार्मण काययोग समान ।

www.JainKosh.org

अनाहारक

(120 – 8 = 112)

गुणस्थान	व्युच्छित्ति	बन्ध	अबन्ध
मिथ्यात्व	13	107	देव-4, तीर्थंकर
सासादन	24	94	13+5 = 18
असंयत	9+4+6+0+34+ 5+16 = 74	75	13+24 = 37
सयोग केवली	1	1	37+74 = 111
अयोग केवली	0	0	112